आचार्य यतिवृषभ

जीवन-परिचय : आचार्य यतिवृषभ आर्यमंक्षु के शिष्य और नागहस्ति के अन्तेवासी थे। उक्त दोनों आचार्यों को कषायपाहुड की गाथाएँ आचार्य परम्परा से प्राप्त हुई थीं। आचार्य यतिवृषभ ने उक्त दोनों गुरुओं के समीप गुणधराचार्य के कषायपाहुड सुत्त की गाथाओं का अध्ययन किया और वे उनके रहस्य से परिचित हो गये, अतएव उन्होंने उन सूत्र-गाथाओं का सम्यक अर्थ ग्रहण करके उन पर सर्वप्रथम छह हजार चूर्णिसूत्रों की रचना की।

आचार्य यतिवृषभ ने चूर्णिसूत्रों की रचना संक्षिप्त शब्दावली में प्रस्तुत कर महान अर्थ को निबद्ध किया है। यदि आचार्य यतिवृषभ चर्णिसूत्रों की रचना न करते तो सम्भव है कि कषायपाहुड का अर्थ ही स्पष्ट न हो पाता।

अत: चूर्णिसूत्रों के प्रथम रचयिता होने के कारण आचार्य यतिवृषभ का अत्यधिक महत्त्व है।

तिलोयपण्णत्ती ग्रन्थ और अनेक प्रमाणों के आधार पर आचार्य यतिवृषभ का समय 5वीं शताब्दी माना जाता है।

रचना-परिचय : आचार्य यतिवृषभ की दो कृतियाँ मानी जाती हैं।

1. **कषायपाहुड पर रचित चूर्णिसूत्र :** कषायपाहुड पर रचित चूर्णिसूत्रों का परिमाण छ: हजार श्लोक प्रमाण है। आचार्य यतिवृषभ ने प्रत्येक सूत्र की रचना बीजपद मानकर व्याख्या रूप से की है।

2. **तिलोयपण्णत्ती :** तिलोयपण्णत्ती करणानुयोग का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है, जो प्राकृत भाषा में लिखा गया है। इसमें तीन लोक के स्वरूप, आकार, प्रकार, विस्तार, क्षेत्रफल और युगपरिवर्तन आदि विषयों का निरूपण किया गया है। साथ ही जैन सिद्धान्त, पुराण और भारतीय इतिहास विषयक सामग्री भी है। यह ग्रन्थ 9 महाधिकारों और 180 अवान्तर अधिकारों में विभक्त है। तिलोयपण्णत्ती ग्रन्थ

विश्व-रचना का साररूप में दर्शन करानेवाला, भूगोल एवं खगोल विषय का विस्तृत ज्ञान देनेवाला अनमोल ग्रन्थ है।

कर्मसिद्धान्त एवं अध्यात्म-सिद्धान्त विषयक ग्रन्थों में प्रवेश करने हेतु इस ग्रन्थ का अध्ययन अतिआवश्यक है। यह ग्रन्थ अनेक ग्रन्थों को अच्छी तरह समझने हेतु सुदृढ़ आधार बनाता है।